वह मैं हूँ

मुरली श्रीवास्तव

सपनों की जंजीर

मैं
सपनों की जंजीरों में
कैद हूँ,
लोहे की होती तो,
टूट भी जातीं,
अब
उम्र कैद की सजा पूरी होंने के बाद भी,
मैं आजाद नहीं हो पाऊंगा।

भ्रम

तुम
ख्वाब हो कि
हकीकत ,
यह भ्रम ताउम्र बना रहा,
और मैं जिंदगी को ख्वाब,
और ख्वाब को ,
जिंदगी समझ कर जी गया।

उम्र की ढलान

ख्वाब बिक रहे थे
ले तो आता मगर रखता कहां
दिल के कोने पहले ही भरे थे
और
उम्र की ढलान का फासला भी
कम बचा था ।

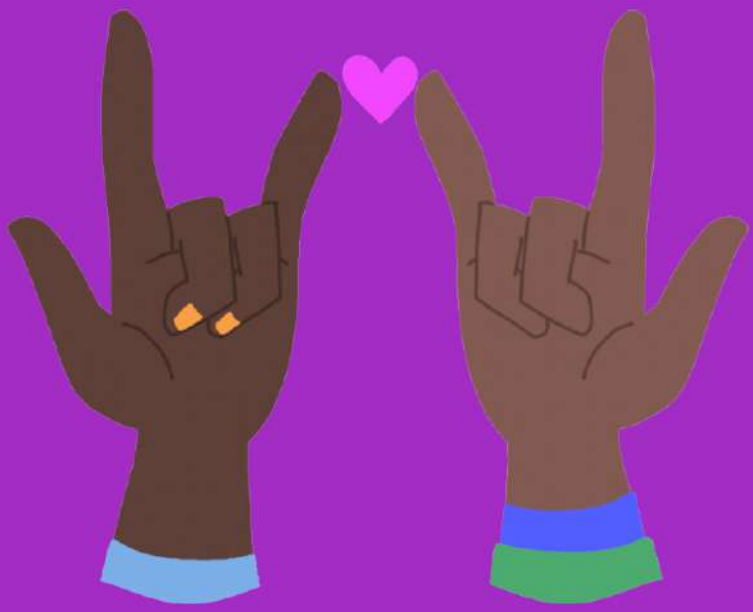

कभी न भूल पाने वाले लम्हे

हे प्रभु,
मुझे,
कभी न भूल पाने वाले लम्हों को,
जीने की ताकत दे दो,
क्योकि,
इस से उठे दर्द और खुशी के लम्हें,
हर बार मेरी सांस रोक देते हैं ।

जागीर

मैं
ख्वाब , हसरत तमन्ना
और उम्मीद की
जागीर छोड़ आया हूँ
ऐ मेरी धड़कनों
क्या अब भी तुम्हें
सुकूंन नहीं।

दर्द के साथी

तुम मेरे सुख, दुख के नहीं,
दर्द के साथी हों,
दर्द, सुख है या दुख,
यह फैसला,
मैं अभी नहीं कर पाया हूँ,
क्योंकि,
दर्द में तुम मेरे साथ हो !

तमन्नायें

ऐ मेरी हसरतों,
जानता हूँ कि ,
नहीं जी सकता
वह जिंदगी तुम्हारे साथ,
जो ,
जी कर आया हूँ,
पर तमन्नाएँ हैं
कि कहती हैं,
जी लूँ वह जिंदगी तुम्हारे साथ ,
जो जी कर आया हूँ।

हकीकत और ख्वाब

हकीकत होती है,
ख्वाब होते हैं,
कि जिस तरह
धरती हकीकत है ,
और चांद का धरती पर उतर आना
ख्वाब,
कि जिस तरह धरती और आकाश
का किसी बिंदु पर मिल जाना ख्वाब
है,
कि जैसे सितारे तोड़ कर किसी
आँचल में टांक देना
ख्वाब है,
इस तरह जो है वह हकीकत और
जो नहीं है वह ख्वाब,
मैं हकीकत हूँ
और तुम ख्वाब ,

वह मैं हूँ

वो जो
जिंदगी के भीतर
थोड़ी सी जिंदगी है,
वह जो आंसुओं के बीच थोड़ी सी खुशी है,
वो जो दर्द के बीच थोड़ी सी मुस्कुराहट है,
वह जो मशीन के बीच थोड़ी सी ,
इंसानियत है,
वह जो धर्म और मंदिर के बीच
थोडी सी आस्था है ,
वह जो हार जीत के बीच
उम्मीद है,
वह जो निराशा के बीच
थोड़ी सी आस है,
वह जो जाने और आने के बीच
वक्त का ठहराव है,
वह जो खोये हुए लम्हों के बीच,
थोड़ी सी जिंदगी है
वह कि जिंदगी के बीच ,
थोड़ा सा खोये हुए से हम हैं
बस वही तो तुम हो ।
और वह जो
तुम्हारे भीतर
थोड़ा सा खुद के होंने का अहसास है
वह मैं हूँ ।

ख्वाब और हकीकत

ख्वाब और हकीकत में
बस वक्त का फर्क है,
एक को वक्त से पहले देखते हैं,
और दूसरा
पूरा होते ही वक्त बदल देता है,
बस हम
वक्त के बदलने तक विश्वास कर सकें ।

ख्वाब ले के आ गया

ख्वाब बिक रहे थे,
मेरी जिंदगी के मोल,
मैं हौसले की कींमत दे,
ख्वाब ले के आ गया।

कुछ होंने से, कुछ होता नहीं है

कुछ होंने से ,
कुछ होता नहीं है,
जैसे कि,
बड़ा बन जाने से ,
आदमीं बड़ा नहीं होता,
जैसे कि बाहर भीड़ होंने से ,
भीतर
भीड़ नहीं होती है ,
या की अकेले होंने से भी,
आदमीं अकेला नहीं होता ।
कि किसी के होंने से ,
कोई होता नहीं है,
न ही किसी के न होंने से ,
कोई नहीं होता,
अर्थ यह कि,
कुछ होंने से,
कुछ होता नहीं है,
जैसे स्वस्थ होंने से कोई, स्वस्थ नहीं होता,
न बीमार होंने से कोई बीमार,
हां यह समझने में उम्र गुजर जाती है।
जिसे मेच्योरिटी कहते हैं ।

गुजरे हुए लम्हों का हिसाब

एक दिन जिंदगी ने मुझसे
गुजरे हुए लम्हों का हिसाब मांगा,
और मैंने मुस्कुरा कर कहा ,
बता तो देता मैं तुम्हें ऐ दोस्त ,
एक एक पल का हिसाब ,
पर क्या करूं ,
मेरी जिंदगी ,
भावनाओं की अमानत है,
गणित की किताब नहीं ।

गुलाम

पहले ले जाओ
किसी को जुनून तक,
मरने मत दो उसे,
जीवित रखो उस बिंदु पर उसे
और छोड़ दो,
फिर कुछ मत करो,
जब वह वापस लौटेगा वहां से,
तो दीवानों की तरह उम्र भर तुम्हें ढूढता फिरेगा,
और तब
तुम शाशक होंगे
और वह गुलाम।

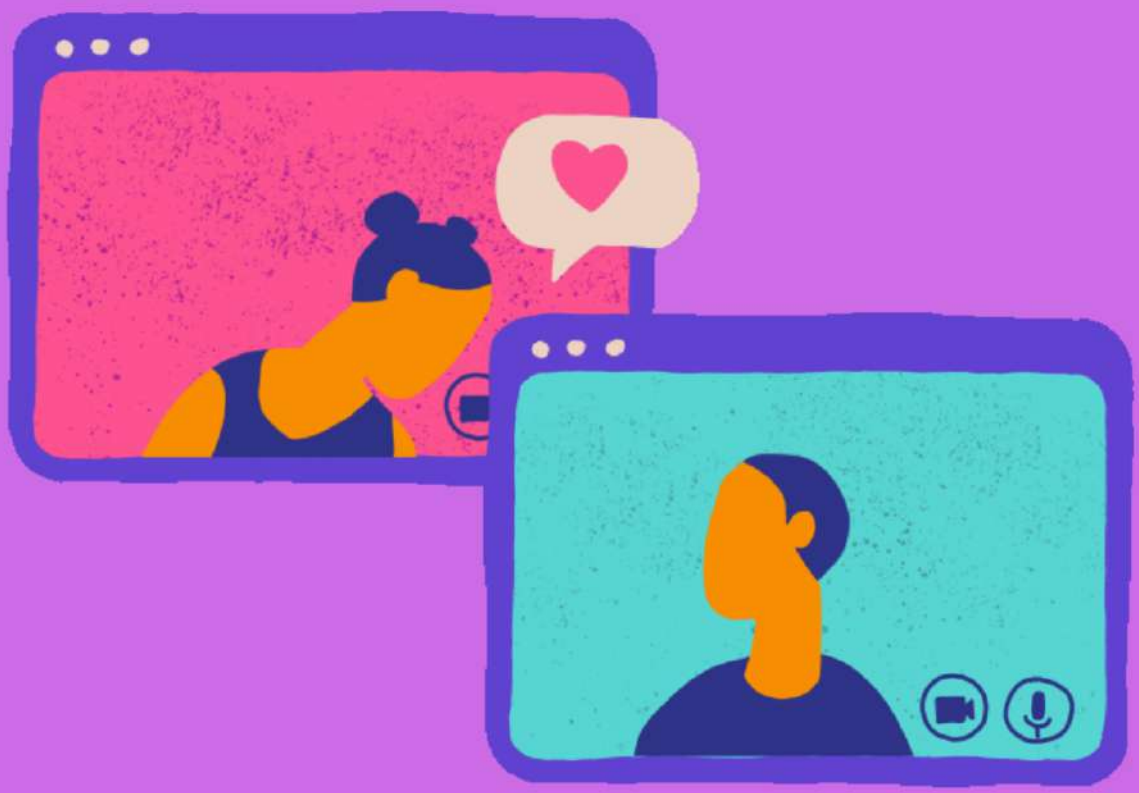

जिंदगी मांगने

आज मुझे,
अपने भीतर, साँसे कम लगी,
धड़कने, रुकती सी प्रतीत हुई,
और मैं,
तुम्हारे दरवाजे,
दस्तक देने आ पहुंचा,
थोड़ी सी और
जिंदगी मांगने ।

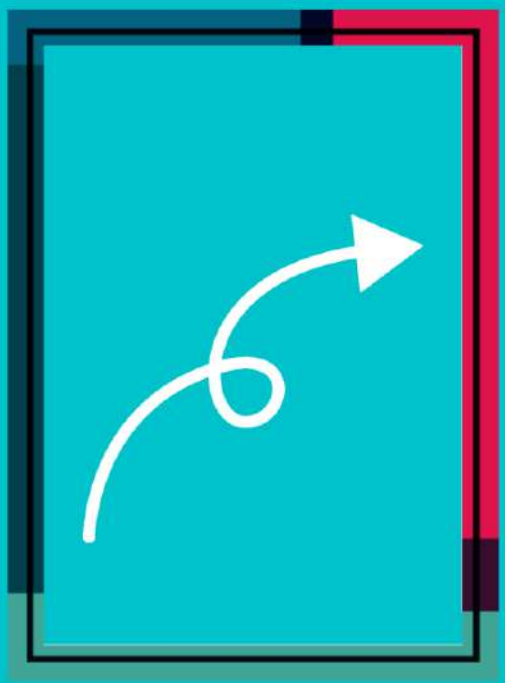

तुम ख्वाब हो गए

मैं ख्वाब देखता था
तुम ख्वाब हो गए
उम्मीद के शहर में
तुम प्यास हो गए
उम्र मेरी एक दिन
लौट कर के आई
तुम आईने के लेकिन
अहसास हो गए .

ख्वाब जी रहा हूँ

जिंदगी तो
उम्र के साथ पूरी हो गई,
मैं तुम्हारे साथ जिंदगी कहां,
ख्वाब जी रहा हूँ ।

बेगुनाह

क्या पता
कल गुनाह कर बैठूं
ए दोस्त
आज मुझे
बेगुनाह जीने दो।

उम्मीद

रोज इस उम्मीद के साथ उठता हूँ,
आज दुनियां बदल जाएगी।
रोज दुनियां बदल जाती है,
उम्मीद नहीं।

बेवजह

ठहर जाते लम्हे
तो रुक जाते तुम
न तुम्हे रुकना था
न वक्त ठहरना
हम तो बस
लम्हों को बेवजह
दोष देते रहे ।

लम्हों में रुकी जिंदगी

हम उम्र और लम्हों को
एक समझ लेते हैं,
जिंदगी का सफर
उम्र से कहां
पूरा होता है
क्योंकि
लम्हों में रुकी जिंदगी,
फिर उम्र भर
कहां मिलती है ।

जिंदगी

जिंदगी
जो लम्हों में गुजर जाती है
हम उसे
उम्र कहते हैं .
लम्हे
जो
होते ही नहीं
हम
उन्हें जीते हैं
और उसे
यादें कहते हैं .
वे जो धड़कनों में बसे रहे ,
उन्हें सांस कहते हैं .
और वह ,
जो सराय है
जिंदगी की
उसे घर कहते हैं।

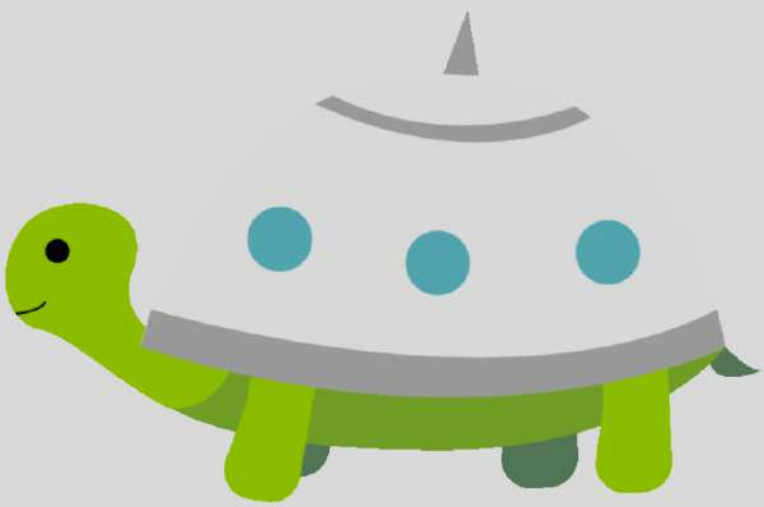

अकेला हो जाता हूँ

सुनो
हो सके तो
मेरी खुशी में शरीक हो जाओ,
दु:ख ,
मैं सहना जानता हूँ ,
क्योंकि ,
न जाने क्यों,
खुशी के लम्हों में,
मैं ,
अकेला हो जाता हूँ ।

हौसला

मुश्किलें
कभी खत्म नहीं होंगी,
हौसला है तो ,
मुश्किलों से
दोस्ती कर लो।

उम्र

जिंदगी तेरे दर पे
छूट जाने की
रवायत ठहरी,
न जाने हम
इसे
उम्र क्यों समझ बैठे ।

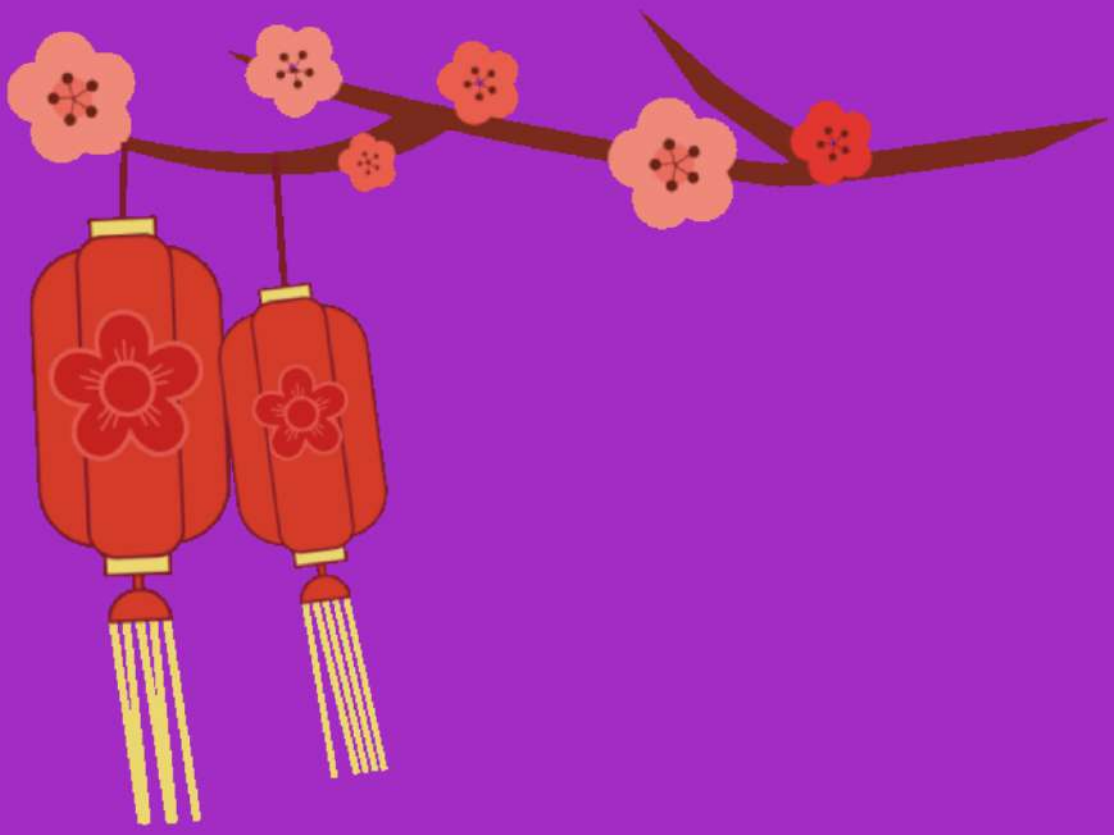

उम्र को जीते जाने के लिए

तुम मेरी तमन्नाओं के दायरे में
अहसास से
जी रहे थे,
और मैं
जिंदगी को
वक्त के दायरे में
रोक कर खड़ा हो गया,
उम्र को
जीते जाने के लिए ।

तमन्ना

ऐ मेरे ख्वाब
क्या मुझे
जुल्फों की छांव दोगे
तमन्नाओं की
कब्रगाह के लिए नहीं,
बल्कि
सुकून के बहते झरने में
नहा लेने की तमन्ना के लिए ।

परिचय

नाम: मुरली मनोहर श्रीवास्तव
पिता का नाम: श्री विजय कुमार श्रीवास्तव (लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार इलाहाबाद)
जन्मस्थान: इलाहाबाद
अध्ययन : बी.ई. मैकेनिकल इंजीनियरिंग (जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली से)
प्रकाशन : नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान दैनिक, अमर उजाला, राष्ट्रीय सहारा, नई दुनिया, मेरे सहेली, जागरण सखी सहित विभिन्न दैनिक व पत्रिका में एक हज़ार से अधिक रचनाएँ
प्रकाशित तथा निरंतर प्रकाशन जारी है।
अभी तक लिखी कहानियाँ मेरी सहेली, जागरण सखी व दैनिक जागरण जैसी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।
व्यंग्य लेखक के रूप में विशिष्ट पहचान हिन्दी की सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। अमर उजाला व राष्ट्रीय सहारा में नियमित कॉलम।
वर्तमान में एन टी पी सी मेजा में उप महाप्रबंधक के पद पर कार्यरत